आओ अब लगाव मुक्त बनें

- राजयोगी ब्र.कु.सूर्य,माउण्ट आबू

सम्पूर्ण अनासक्त वृत्ति व उपराम वृत्ति हमारी सम्पूर्णता के चिह्न हैं। कल्प की पूर्णता ज्यों-ज्यों समीप आ रही है, स्थिति की सम्पूर्णता का आह्वान करना उतना ही आवश्यक है। ईश्वरीय महावाक्यों में अव्यक्त बापदादा ने हम सभी ब्रह्मा-वत्सों को सम्पूर्णत: लगाव-मुक्त होने के लिए प्रेरित किया है, ताकि लगाव-मुक्त होने की श्रेष्ठ इच्छा हम अपने अंतर्मन में जागृत करें। हमारी यह दृढ़ इच्छा हमारे लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेगी।

जन्म-जन्म हम जिस देह को धारण किये रहे, उस देह रूपी घर से हमारा लगाव हो गया। मनुष्य आत्मा जहां रहती है व जिसके साथ रहती है, जिनकी वह पालना करती है या जिससे पालना पाती है - उनके प्रति उनका लगाव सहज भाव से हो जाता है। देह के सम्बंधों में लगाव हो, चाहे देह से सम्बन्धित

अन्य वस्तुओं में - उन सबका कारण दैहिक लगाव ही है।

जहां मेरापन है वहां लगाव है, जिस वस्तु, व्यक्ति, कार्य या स्थान को हम मेरा मानते हैं, उससे हम आसक्त हो जाते हैं। जहां से हमें स्नेह मिलता है, जहां से हमें सहयोग मिलता है, जो हमें सहारा देता है या जो वस्तु हमें प्रिय लगती है, उससे हमारा लगाव हो जाता है और इन सब बातों की संसार में रहते हुए आवश्यकता भी है। हम यह नहीं कह सकते कि हमें किसी का भी स्नेह-सहयोग नहीं चाहिए। हम यह भी नहीं कह सकते कि वस्तु, वैभव या साधनों की हमें कोई आवश्यकता नहीं। परंतु हमें चिंतन करना है कि सब वस्तुओं का उपयोग करते हुए भी हम न्यारे कैसे रहें?

★ नुकसान का ज्ञान

किसी चीज़ का त्याग मनुष्य तब ही करता है, जब वह उससे होने वाली हानियों से परिचित हो। प्रिय चीज़ का त्याग कोई क्यों करेगा। संसार में मोह, लगाव या आसक्ति आम बात है, परंतु साधना के पथिकों के लिए लगाव लगन को कम करने वाला है, यह एक विघ्न है। इसमें मुख्यत: ये हानियां हैं - लगाव मनुष्य को उदास करता है व दु:ख की महसूसता कराता है। क्योंकि जिससे लगाव होता है, हम सदा उसके साथ रहना चाहते हैं, परंतु जब लगाव होता है तो खुशी नष्ट हो जाती है और मनुष्य उदासी के महारोग का शिकार हो जाता है, उसे अकेलेपन की महसूसता आती है और सच्चे प्रियतम परमात्मा से किनारा होने लगता है। यही वह अनुभव है जिसके आधार पर कहा जाता है कि लगाव कई साधकों को अपवित्रता के मार्ग पर भी ले जाता है। यों तो एक माँ का भी बच्चों से लगाव होता है, उसमें अपवित्रता नहीं, परंतु दु:ख की अनुभूति होती है।

★ कर्मातीत बंधनमुक्त स्थिति

लगाव मनुष्य को झुकाता है, दूसरों के अधीन करता है। योगी यदि किसी के अधीन होंगे तो वे ईश्वरीय अधिकार प्राप्त कैसे करेंगे और उन्हें स्वर्ग का अधिकार भी कैसे प्राप्त होगा?

लगाव हमें महान् लक्ष्य को भुला देता है। जन्म-जन्म हम मुक्ति की कामना करते आये और जब मुक्ति का मार्ग मिला तो हम स्वयं को लगाव की रस्सियों में बांध लें तो इसे सद्विवेक नहीं कहेंगे। स्वयं परमशिक्षक भगवान् ने हमें कर्मातीत होने का लक्ष्य दिया है..... कर्मातीत स्थिति बंधनमुक्त स्थिति है जबकि लगाव बंधन पैदा करता है।

★ एक परमात्मा के प्रेम में मग्न

लगाव संकल्प-शक्ति को नष्ट करने वाला है, इससे रूहानियत लोप हो जाती है, बुद्धियोग भटकने लगता है और आत्मा प्यासी की प्यासी ही रह जाती है। इस प्रकार हम सूक्ष्मता से चिंतन करें। हम ईश्वरीय प्राप्तियों के लिए यहां आये हैं। लगाव के वश तो हम जन्म-जन्मांतर रहे, अब तो हम एक परमपिता के प्रेम में मग्न होकर सारे विश्व को सच्चे प्रेम का पाठ पढ़ाये।

★ लगाव कौन-कौन से हैं?

यों तो मुख्य चर्चा देहधारियों के लगाव की ही होती है और यही लगाव सर्वाधिक घातक भी है, क्योंकि उससे स्वयं का भी देहभान बढ़ता है और दूसरे का भी पतन होता है, उससे मुक्त होना तो हमारा प्रथम ध्येय है। देह और देह के सम्बन्धों से लगाव व अलौकिक सम्बन्धों से लगाव के अतिरिक्त अन्य लगाव भी हैं -

– वस्तु, वैभव व साधनों से लगाव भी मनुष्य को इतना अधीन कर लेता है कि उनके बिना जीवन नीरस लगने लगता है और इस प्रकार प्रकृति का मालिक योगी प्रकृति के अधीन हो जाता है।

– लगाव मनुष्य को अपनी इच्छा से भी होता है। मनुष्य सोचता है कि मेरी इच्छा या मेरा संकल्प पूर्ण होना ही चाहिए और इस प्रकार इच्छा एक बंधन बन जाती है व परेशान करने वाली हो जाती है।

मनुष्य का लगाव उनकी प्राप्तियों से भी होता है। होने वाली प्राप्ति व उससे प्राप्त खुशी मनुष्य को बंधन में बांध लेती है। पद, पोज़ीशन, मान-शान से भी मनुष्य को लगाव रहता है। अपनी ड्यूटी में भी मनुष्य आसक्त रहता है, मैं इन्चार्ज हूँ - यह स्मृति उसकी परेशानी का कारण बनी रहती है। स्थान से भी मनुष्य की आसक्ति होती और वह स्थान छोड़ना नहीं चाहता।

★ लगाव-मुक्त कैसे बनें?

पहले ही मनुष्य किसी-न-किसी तरह के लगाव से ग्रस्त है। इसलिए साधना के पथ पर कदम रखने के बाद मनुष्य को अब किसी भी लगाव को अपने मन-मंदिर में प्रविष्ट नहीं होने देना चाहिए। चलते-चलते किसी दूसरे का भी हमसे लगाव हो सकता है, इसमें भी सावधानी की आवश्यकता है, क्योंकि लगाव होने की गति भी अति सूक्ष्म है परंतु इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि मनुष्य रूखा बन जाए, वह स्नेह का आदान-प्रदान न करे, वह संगठन में सन्यासी की तरह ही रहे और संगठन से कटा-कटा सा रहे। उसे संगठन में पारिवारिक स्नेह संपन्न रहते हुए भी न्यारा रहने की साधना करनी चाहिए। संगठन से मुक्त होने के लिए निम्न बातों पर ध्यान दें -

★ अमृतवेले स्वयं को ईश्वरीय प्राप्तियों से भरपूर करें

अमृतवेले के महत्व से कौन परिचित नहीं है, परंतु अमृतवेले का संपूर्ण रस किसी विरले को ही प्राप्त होता है। अमृतवेले आनंद की अनुभूति हेतु उठते ही दो बातों का चिंतन करें - एक तो यह चिंतन करें कि मेरे क्या-क्या कर्त्तव्य हैं? विश्व मुझसे क्या-क्या चाहता है? मुझे विश्व को इस समय श्रेष्ठ वायब्रेशन्स देने हैं, मुझसे लाखों आत्मायें शांति की मांग कर रही हैं, इस समय मुझे सबको खुशी प्रदान करनी है। इस प्रकार अपने कर्त्तव्यों की स्मृति से अलबेलापन समाप्त हो जायेगा।

दूसरा चिंतन यह करें कि इस समय बाबा से क्या-क्या ले सकता हूँ - भगवान इस समय भोलेनाथ के रूप में बैठता है, उसे मनाया जा सकता है, उसे रिझाया जा सकता है, उससे अपनी गलतियों को माफ कराया जा सकता है। उससे विजयी बनने का वरदान लिया जा सकता है और सर्व खज़ाने अधिकार के रूप में प्राप्त किये जा सकते हैं, स्वयं को शक्तियों से संपन्न किया जा सकता है, समस्याओं व विघ्नों का हल लिया जा सकता है। इस प्रकार का चिंतन आत्मा को नशे से युक्त करेगा। फिर रूहानी ड्रिल का अभ्यास करें और योग-युक्त हो जाएं। परमपिता से किसी भी सम्बन्ध से रूह-रिहान करके स्वयं को ईश्वरीय प्यार से सम्पन्न करें। सवेरे-सवेरे किया गया प्राप्तियों का अनुभव आत्मा को सारा दिन आनंदित स्थिति में रखेगा और कोई भी लगाव का बंधन आत्मा को बांध नहीं सकेगा क्योंकि आत्मा का प्राप्तियों से खोखला होना ही लगाव का मुख्य कारण है।

दाता की स्मृति रहे

मनुष्य किसी के गुण, - शेष पेज 11 पर...

भिलाई नगर। बच्चों के लिए आयोजित 'उत्कर्ष समर कैम्प' में 'जीवन में गुणों का महत्व' विषय पर सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. तारिका।

गोवा-पणजी। डायरेक्टरेट ऑफ एग्रीकल्चर,गोवा सरकार द्वारा ईला फार्म में आयोजित 'सम्पूर्ण ग्राम विकास' कार्यक्रम में दीप प्रज्वलित करते हुए राजयोगी ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, मिनिस्टर ऑफ रूरल डेवलपमेंट जयेश सालगांवकर, डायरेक्टर ऑफ एग्रीकल्चर उल्हास पाई काकोडे तथा ब्र.कु. शोभा।

इस्लामपुर-महा.। राजयोगिनी ब्र.कु. शोभा को उनके सामाजिक आध्यात्मिक क्षेत्र में उत्कृष्ट सेवाओं के लिए 'आदर्श महिला पुरस्कार' से सम्मानित करते हुए राष्ट्रवादी युवा कांग्रेस सांगली जिला अध्यक्ष शरद लाड। साथ हैं युवा बिज़नेसमैन प्रतीक जयंत पाटील तथा अन्य।

ग्वालियर-माधवगंज। 'त्रिदिवसीय बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' के दौरान मंचासीन हैं ब्र.कु. आदर्श बहन, डॉ. भोजवानी, नंदन सिंह रौतेला, ब्र.कु. डॉ. गुरुचरण तथा अन्य।

इंदौर-सुदामा नगर। नवनिर्मित 'प्रभु उपहार भवन' का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. आत्मप्रकाश,माउण्ट आबू, ब्र.कु. हेमलता, ब्र.कु. शशि, ब्र.कु. दामिनी तथा अन्य।

रायपुर-चौबे कॉलोनी(छ.ग.)। 'प्रेरणा बाल व्यक्तित्व विकास शिविर' का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. सविता, कलेक्टर ओ.पी. चौधरी, क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु. कमला, अंतर्राष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी नीता डूमरे तथा ब्र.कु. अदिति।